विज्ञान की शान ये वैज्ञानिक महान

स्टीफन पॉल जॉब्स

नीरद (कार्टूनिस्ट) साकेत विहार,
अनीसाबाद पटना-800002 (बिहार)

चित्र/आलेख
नीरद/शैलनीरद

प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व की प्रसिद्ध और अग्रणी कंपनी 'एप्पल' का नाम तो आप ने अवश्य सुना होगा। कर्ज लेकर 1 अप्रैल, 1976 में एक गैरेज में शुरू की गई इस कंपनी को फर्श से अर्श तक पहुंचाने का श्रेय जिस व्यक्ति को है, उसका नाम स्टीव जॉब्स है!

स्टीव जॉब्स का जन्म 24 फरवरी, 1955 को अमरीका के सेनफ्रॉसिस्को शहर में हुआ था। उन्हें जन्म देने वाली मां एक अविवाहित कॉलेज छात्रा थी, पिता अब्दुलफतेह जंदाली एक कैसिनो के मालिक थे, जिनसे स्टीव कभी मिले नहीं।

अविवाहित मां जोआन सिमसन और पिता जंदाली ने पैदा होते ही उन्हें छोड़ दिया। उन्हें एक अनाथालय के हवाले कर दिया। शीघ्र ही उन्हें पाउल और कालरा जॉब्स ने अनाथालय से गोद ले लिया। यद्यपि गोद लेने वाली मम्मी पाउल के पास कॉलेज की कोई डिग्री नहीं थी और पिता तो हाई स्कूल पास भी नहीं थे।

फिर भी गोद लेने के पूर्व उन्होंने वादा किया कि वे स्टीव को कॉलेज तक की शिक्षा जरूर दिलाएंगे। जॉब्स का पूरा नाम स्टीफन पॉल जॉब्स था, पर वह चर्चित व प्रसिद्ध हुए स्टीव जॉब्स के रूप में ही।

स्टीव की स्कूली पढ़ाई कैलिफोर्निया में हुई। स्कूल के बाद वह 'हैवेट-पैकार्ड' कंपनी की ओर से होने वाले लेक्चर में हिस्सा लेने लगे। उन्होंने वहीं पार्ट टाइम नौकरी भी की।

कॉलेज की पढ़ाई के लिए उन्होंने पोर्टलैंड के रीड कॉलेज में प्रवेश लिया। छात्रावास में उन्हें कमरा नहीं मिला। अतः वह दोस्तों के कमरों में फर्श पर सोते।

अपना खर्च जुटाने के लिए कोक की खाली बोतल बेचते। सात मील पैदल चलकर इस्कॉन मंदिर में मुफ्त भोजन करने जाते। पहले सेमेस्टर के बाद ही उन्होंने कॉलेज छोड़ दिया। उन्हें लगा कि इस पढ़ाई से उन्हें कोई फायदा नहीं है।

स्टीव गरीब माता-पिता की सारी कमाई पढ़ाई की फीस में खर्च कर रहे थे। उन्होंने कॉलेज की कैलीग्रॉफी की कक्षा नहीं छोड़ी। क्योंकि उक्त रीड कॉलेज में कैलीग्रॉफी की शिक्षा सबसे अच्छी थी। इसका फायदा उन्हें पहला कंप्यूटर बनाते समय मिला। उन दिनों भारत के अध्यात्म की काफी चर्चा थी।

अतएव, कॉलेज छोड़ने के उपरांत वह बतौर हिप्पी भारत चले आए। उनके साथ कॉलेज का मित्र डेनियल कोटके भी था। स्टीव भारत आकर नैनीताल के बाबा नीमकरौली के कैंची आश्रम में रहने लगे। भारत में उन्होंने कल्पना से अधिक गरीबी होने के बावजूद अत्यधिक सादगी और पवित्रता पाई। उन्होंने यहां नौकरी भी की।

चित्र कथा

सी.एस.आई.आर. - राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली-110012 के लिए श्रीमती दीक्षा बिष्ट द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इंटरनेशनल प्रिन्ट-ओ-पैक लिमिटेड, सी-4 से सी-11, होज़री कॉम्पलैक्स, फेज़-II एक्सटेंशन, नोएडा-201305 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।